IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, RESEARCH JOURNAL
Vol. 1, Issue 01, Nov 2022

राष्ट्र निर्माण में अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यमः खेल

[1]पुष्पेन्द्र सिंह
[1] असिस्टेंट प्रोफेसर, इंदिरा गांधी राजकीय महिला महाविद्यालय, रायबरेली।

Abstract

पृथ्वी पर मानव अस्तित्व के शुरूआती दौर से ही मानव अपनी भावनाओं को विभिन्न भावों, मुद्राओं के माध्यम से अभिव्यक्त करता आया है। मनुष्य के विवेकशील होने के कारण, उसके मन, मस्तिष्क में नित नये विचारों, भावों की उत्पत्ति एक स्वाभाविक एवं निरंतर प्रक्रिया है। इन विचारों, भावों की उत्पत्ति एक स्वाभाविक एवं निरंतर प्रक्रिया है। इन विचारों, भावों को प्रकट करने के लिए, उसे प्रकृति द्वारा कई साधनों से नवाजा गया है।

इन साधनों का सार्थक उपयोग करके, वह अपने विचारों तथा भावों को सरलतापूर्वक अन्य व्यक्तियों तक पहुँचाता है। विचारों तथा भावों के आदान–प्रदान की यह प्रक्रिया 'सम्प्रेषण' (Communication) के नाम से जानी जाती है। इसके अतिरिक्त मानव ने इन विचारों एवं भावों को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाने के लिए तथा चिरकाल तक इन्हें सुरक्षित रखने के लिए ग्रन्थों, पुस्तकों का भी सृजन किया है।

Keywords: - राष्ट्र निर्माण, अभिव्यक्ति, सशक्त माध्यम, खेल, नव–निर्माण, विकासं

Introduction:

किसी भी देश का नव–निर्माण, विकास एक ऐसी जटिल और बहुआयामी प्रक्रिया है, जो सुव्यवस्थित रूप से तैयार की गयी विकास नीतियों के रूप में राजनीतिक इच्छाशक्ति के रूप में रेखांकित करती है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी पूरी–पूरी क्षमता का उपयोग कर सके इसके लिए आर्थिक, शैक्षिक और सामाजिक बुनियादी ढांचा होना बहुत जरूरी है, जनता की खुशहाली और जीवन की गुणवत्ता में सुधार करके मानव विकास का मूलभूत लक्ष्य हमारी राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया का अत्यन्त आवश्यक अंग है।

21वीं सदी को एशियाई सदी माना जा रहा है, पृथ्वी के इस भू–भाग पर भारत देश की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। आज समूचा विश्व भारत देश को एक उभरती हुई शक्ति के रूप में देख रहा है, और ऐसा हो भी क्यों ना? जब विश्व की सबसे अधिक कार्यशील युवा शक्ति भारत देश के पास है, जरूरत है, तो बस इस शक्ति को सही दिशा एवं रूप देने की। क्योंकि जिस प्रकार एक अणु/परमाणु की शक्ति का सार्थक एवं सकारात्मक तरीके से उपयोग करके राष्ट्र एवं समाज को विकास की नयी ऊंचाइयों पर लेकर जाया जा सकता है, वही दूसरी ओर इस शक्ति को नकारात्मक उपयोग की संभावना से, मानव अस्तित्व के लिए संकट भी पैदा हो गया है। इतिहास गवाह है कि राष्ट्रों की भाग्य लिपियों को युवाओं ने अपने खून की स्याही से लिखा है, लेकिन हमारे देश, समाज का यह दुर्भाग्य है, कि हम अपने युवा अंग को उत्तरदायित्व निर्वहन का सही और सामाजिक प्रशिक्षण

IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, RESEARCH JOURNAL
Vol. 1, Issue 01, Nov 2022

नहीं दे रहे हैं। लोग यह भूल जाते हैं, कि यही शक्ति, यही वर्ग राष्ट्र का भावी उत्तराधिकारी है। उनको इस उत्तरदायित्व वहन के योग्य बनाना ही, उसकी सेवा को राष्ट्र निर्माण में पारिभाषित करने के बराबर है। एक नई पौध, एक नये फलक का सृजन करती है, और विकास को नई ऊंचाइयां प्रदान कर सकती है।

इस धारा को हम राष्ट्र निर्माण एवं विकास के सम्प्रेषण के झरोखे से हम एक ताजातरीन उदाहरण से समझने का प्रयास करें, तो जहां हमारे राष्ट्र के प्रधानमंत्री, माननीय नरेन्द्र मोदी जी, अपनी अभिव्यक्ति द्वारा युवा ऊर्जा को सकारात्मक दिषा में कार्य करने के लिए अभिप्रेरित कर रहे हैं, व इसी क्रम में राष्ट्र निर्माण के लिए देशवासियों (चाहे बात 'जन–धन योजना' द्वारा गरीबों के खाते तक धन पहुंचाने की हो या 'मेक इन इंडिया' द्वारा भारत की अर्थव्यवस्था को गति प्रदान करने की) को अपना सर्वस्व योगदान देने का आह्वान कर रहे हैं। वहीं दूसरी ओर इसी अभिव्यक्ति, सम्प्रेषण कौशल का उपयोग कर, कुछ राष्ट्र विरोधी तत्व, हमारे देश के भविष्य युवाओं, आम नागरिकों व अन्य जनमानस को को पथभ्रष्ट, गुमराह कर रहे हैं, जिस कारण आज हमारे देश में भाषावाद, क्षेत्रवाद, आतंकवाद, अलगाववाद, धर्मनिरपेक्ष संस्कृति को बचाये रखने की चुनौती, हिंसा, कन्या भ्रूण हत्या और न जाने कितनी तरह की समस्यायें मानव मात्र की इस अभिव्यक्ति का गलत ढंग से उपयोग करने से उत्पन्न हुई है, जिस कारणवश हम अपनी ऊर्जा का दोहन विकास, राष्ट्र निर्माण में नहीं लगा पा रहे हैं।

वस्तुतः यह राष्ट्र निर्माण के लिए प्रश्न चिन्ह बन गया है। तो प्रश्न उठता है कि इस समस्या का समाधान कैसा किया जाए? क्योंकि हमारे राष्ट्र के पास शक्ति है, समर्थ है, जज्बा है तो बस आवश्यकता है इन संसाधनों को सही दिशा में प्रशिक्षण देकर राष्ट्र निर्माण के कार्यो में लगने की। और अगर यही कार्य हमारी शक्तियों (बच्चे, युवा, आम जनमानस) को खेल–खेल में सिखाई जाए तो बस इससे अच्छा क्या हो सकता है, ऐसी मुझे आशा है।

नेपोलियन जैसे महान योद्धा को पराजित करने वाले अंग्रेज सैन्य अधिकारी नेल्सन ने बिना कारण यू ही नहीं कहा था कि **The war of waterloo was won in the fields of Eton** यानि मैने वाटरलू के युद्ध में जो सफलता प्राप्त की उसका प्रशिक्षण ईटन के खेल के मैदान में मिला था। यकीनन खेल ही वे माध्यम है जो हममे विजेता बनने का जोश और जज्बा भरते हैं। खेल हमें जीना सिखाते हैं, जिंदगी के तमाम महत्वपूर्ण सबक हम खेल के मैदान पर सीखते हैं। जीवन में खेलों का विशेष महत्व है, खेल जहां जीवन को गति और लय प्रदान करते हैं, वहीं सफलता और विकास का पथ भी प्रशस्त करते हैं।

1. राष्ट्रीय एकीकरण, विकास एवं अनुशासन को प्रोत्साहन

भारत विभिन्न रीति रिवाजों, संस्कृतियों, धर्मों, जातियों और नस्लों वाला देश है, जो विभिन्न भौगोलिक वातावरण एवं परिस्थितियों में रहते हैं, इसीलिए राष्ट्रीय एकीकरण की भावना समय की आवष्यकता है, खेल एवं व्यावहारिक शिक्षा द्वारा इन विषमताओं और अंतरालों को पाटा जा सकता है, उदाहरण के जरिये अगर हम टीम इंडिया (क्रिकेट) को ही देखे, तो हमें सहज ही ज्ञात हो जाता है, कि इस राष्ट्रीय टीम में विभिन्न धर्मों, जातियों, भौगोलिक पृष्ठभूमि के खिलाड़ी अपनी जमीनी हकीकत

IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, RESEARCH JOURNAL
Vol. 1, Issue 01, Nov 2022

को छोड़कर, माला के मनको के समान एक टीम में बंधे या गुथे हुए हैं, जिस कारण हमें शिक्षा मिलती है कि हम चाहे किसी धर्म या जाति के भले ही क्यों न हों, हमारा देश एक है, हमारा राष्ट्र एक है, और वो कोई दूसरा नहीं हमारा प्यारा हिन्दुस्तान है। जिसके विकास के लिए हम सबको मिलकर कार्य करना है।

कोई भी राष्ट्र तभी विकास कर सकता है, जब उसके नागरिकों को उसे अपनी योग्यताओं और क्षमताओं का पूर्ण विकास करने का समान अवसर मिले। खेल एवं हमारी शिक्षा वह एजेंसी है, जो उनकी योग्यताओं, क्षमताओं के आंकलन से उसका राष्ट्र विकास में स्थान सुनिश्चित करती है। जिससे उसके मन में अनुशासन की भावना का विकास करती है, इससे राष्ट्रीय अनुशासन को भी प्रोत्साहन मिलता है।

2. आधुनिकता, शोध एवं वैज्ञानिक नजरिया विकसित करने में सहायक

खेल एवं शिक्षा व्यक्ति के मानसिक फलक का विस्तार करती है, और उसकी विष्लेषण क्षमता और योग्यता को बढ़ाकर उसकी उत्सुकता एवं जिज्ञासा को ऊर्जा प्रदान करती है, ताकि वह अज्ञात चीजों की खोज कर सके और अपने आपको आगे के अनुसंधान के लिए तैयार कर सके। खेल क्रियाओं के प्रदर्शन में निरंतर सुधार, नवीनतम तकनीक के ईजाद करने के लिए प्रयासरत रहना, व तत्पश्चात इनको जमीं पर उतारकर सभी के समक्ष प्रस्तुत करना जैसी भावनाओं की अलख मन में जगाने का कार्य खेल करता है।

खेल मनुष्य के क्रियात्मक पहलू की वह पाठषाला है जिसमें व्यक्ति स्वयं के ज्ञान, अनुभव, प्रशिक्षण द्वारा सीखता जाता है, और मजे की बात यह है कि उसको पता भी नहीं चलता है। इसी प्राप्त ज्ञान के आधार पर वह राष्ट्रीय भूमिका का निर्माण कार्य हेतु प्रेरित होता है।

3. खेल संस्कृति द्वारा ''हर इंसान को इंसान समझा जाये'' तथा लोकतांत्रिक सिद्धान्तों के आदर्श को मन में बैठाना

मूल्य आधारित व्यावहारिक शिक्षा, समाज व राष्ट्र के लिए ऐसे व्यक्तियों का निर्माण करती है, जो मानवीय मूल्यों से समृद्ध हों, जो समुदाय, समाज और राष्ट्र की सेवा के लिए समर्पित भाव से आगे आये। खेल मनुष्य को व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करते हैं, जिसमें किसी भी स्तर भी चाहे बात लिंग के आधार की हो, या सामाजिक संरचना, क्षेत्रीय असमानता, भाषायी, धार्मिक, अलगाववाद की हो, सभी को प्रकृति द्वारा प्रदत्त ज्ञान के तराजू में समान रूप से तोला जाता है और सभी संबंधित खिलाड़ियों का मानवीय मूल्यों के साथ–साथ राष्ट्रीय समर्पण के एकीकरण और विकास में अपना सर्वस्व देने के लिए भीतर तक आन्दोलित करता है उदाहरणतया– अगर किसी टीम के मात्र कैप्टन का चयन करना है तो भी सभी खिलाड़ियों की राय–मशवरा लिया जाता है, जोकि हमारे लोकतांत्रिक मूल्यों को मजबूत करता है और इन्हीं मूल्यों को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में घटित घटना से मिलाकर मैं बात करूं तो, आज हमारे देश उत्तरी सिरमौर जम्मू एवं कश्मीर कुछ राष्ट्र विरोधी तत्वों की गलत बयानबाजी या अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के गलत उपयोग के कारण जल रहा है, लेकिन जलाने वाले

IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, RESEARCH JOURNAL
Vol. 1, Issue 01, Nov 2022

शायद यह भूल गये हैं कि कोई भी तत्व इस तरह की गतिविधियों को अंजाम देकर, अपने घर, समाज को नुकसान पहुंचाकर स्वयं अपना या यूं कहूं कि आत्मघाती नुकसान कर, राष्ट्र को नुकसान पहुंचा रहे हैं।

अगर कोई बात, विचारों में विरोधाभास है, तो उसे एक साथ बैठकर लोकतांत्रिक तरीके से सुलझाया जा सकता है। क्योंकि कभी भी आग या गोली का जवाब आग या गोली नहीं हो सकती। अगर आग को शांत करना है, बुझाना है, तो पानी या अहिंसा का रास्ता अख्तियार तो करना ही पड़ेगा, आज नहीं तो कल। इसीलिए खेलों से हमें यह शिक्षा मिलती है, कि अपने हितों को साधने से पहले राष्ट्रहित के बारे में सोंचे, क्योंकि हमारा अस्तित्व राष्ट्र से ही है।

4. पर्यावरण के अनुसार अनुकूलन, व परिवर्तन को स्वीकार करना

अस्तित्व के लिए संघर्ष करके ही मानव बचा हुआ है, वह केवल इसीलिए क्योंकि अपनी योग्यता के कारण उसने पर्यावरण को अंगीकार करके, सामंजस्य स्थापित किया है। शिक्षा एवं खेल न केवल स्वीकार करना सिखाती है वरन् समायोजित करना भी सिखाती है, बल्कि वह क्षमताओं का विकास कर उन्हें परिष्कृत कर बदलती परिस्थितियों के अनुरूप ढालती है। खेल प्रदर्षन के दौरान विभिन्न परिस्थितियों में अपने विवेकानुसार खिलाड़ियों को अपने फैसले स्वयं लेने पड़ते हैं। व अपने आपको भी स्थितिनुसार समायोजित करना पड़ता है। मनुष्य का यही व्यावहारिक ज्ञान विभिन्न विषम परिस्थितियों में देश, काल के अनुसार फैसले लेने में सक्षम बनाता है।

निष्कर्ष (Conclusion)-

खेल मानव विकास, मानव अधिकारों की रक्षा के लिए एक सर्वोत्तम साधन है। शिक्षा एवं खेल एक बहुआयामी तत्व है। खेल व्यक्ति के सीमाओं से मुक्त कर उसके कार्यक्षेत्र को व्यापक बनाती है। एक सुशिक्षित व्यक्ति की अभिरूचि के क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय हितों से लेकर स्थानीय हित भी सम्मिलित होते हैं। खेल व्यक्ति को इस योग्य बनाते हैं, कि वह जीवन की चुनौतियों का बेहतर तरीके से सामना कर सके। इस प्रकार खेल, व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्रीय विकास का अति महत्वपूर्ण तत्व है। शायद बहुत पहले ही खेलों का राष्ट्र व मानव जीवन में मूल्य समझते हुए ही, हमारे युवा हृदय सम्राट एवं राष्ट्र नायक 'स्वामी विवेकानंद' ने ठीक ही कहा था कि– ***"भारत को आज भगवत् गीता की नहीं, बल्कि फुटबाल के मैदानों की जरूरत है।"***

संदर्भ सूची

1. सक्सेना, प्रबंध के सिद्धान्त, 2001, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा।
2. शुक्ल एवं मिश्र, व्यावसायिक सम्प्रेषण, 2013–14, एस बी पी डी पब्लिशिंग हाउस, आगरा।
3. अग्रवाल, परीक्षा मंथन (1–5), 2013–14, 7 ताशकंद मार्ग, सिविल लाइंस, इलाहाबाद।
   website-www.manthanprakashan.com
4. कल्पना राजाराम, निबंध–बोध, 2013, स्पेक्ट्रकम बुक्स प्रा0 लि0, 102–103, प्रथम तल, टी सी जैन टॉ0र – 3, ए–1 जनकपुरी, नई दिल्ली–110058.

IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, RESEARCH JOURNAL
Vol. 1, Issue 01, Nov 2022

5. मिश्र, निबंध मंजूषा, 2013 मैक ग्रा एजूकेशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली।
6. गुप्ता, भारतीय षिक्षा के समसामयिक प्रकरण, 2010, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
7. जैन, निबंधमाला, 2011, अरिहंत पब्लिकेशन्स (इण्डिया) लिमिटेड, मेरठ (यू0पी0)
8. उन्नति विकास शिक्षण संगठन, भारत सरकार, न्छक्च्, दलित मानवाधिकार कार्यकर्ताओं की प्रवेशिका, 2012, जी–1/200, आजाद सोसाइटी, आबांवाडी, अहमदाबाद–380015.
9. अजमेर सिंह, शारीरिक शिक्षा तथा ओलम्पिक अभियान, 2012, कल्याणी, पब्लिशन्स, लुधियाना।
10. पटेल एवं पाण्डेय, शारीरिक शिक्षा के मूलाधार, 2014–15, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा–